**प्रेस विज्ञप्ति**

दलहन संस्थान में स्थापना दिवस का आयोजन

आईसीएआर- भारतीय दलहन अनुसन्धान संस्थान में दिनांक 05 सितम्बर 2025 को, 33 वाँ स्थापना दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया , इस अवसर पर प्रो. विनय पाठक, कुलपति, सीएसजेएमयू कानपुर एवं डॉ सुनील चंद्र दुबे, कुलपति, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, रांची झारखंड मुख्य अतिथि और डॉ सीमा परोहा निदेशक राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर विशिष्ट  अतिथि थे  I

                 संस्थान के निदेशक डॉ जी.पी.दीक्षित ने संस्थान की विभिन्न गतिविधियों/ उपलब्धियों  पर प्रकाश डाला, आपने बताया कि दलहन उत्पादन के क्षेत्र में हमारा देश आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर है I पिछले वर्ष संस्थान को 5 प्रमुख बाह्य वित् पोषित परियोजनाये प्राप्त हुए जो लगभग 8.0 करोड़ रुपये का है I उन्होंने संस्थान द्वारा विकशित 85 प्रजातियों का वर्णन करते हुए अन्य तकनीकियों के बारे में भी प्रकाश डाला I पिछले एक वर्ष में संस्थान द्वारा 52 ट्रेनिगं आयोजित की गयी जिसमे लगभग 10000 किसान लाभान्वित हुए, संस्थान द्वारा चलाये जा रहे अन्य परियोजनाए जो की अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति से सम्बंधित है 3850 किसानों को इसके द्वारा सीधे लाभ पहुचाया गया I निदेशक महोदय ने सरकारी निजी कंपनी भागीदारी में किया जा रहे प्रयास के बारे में भी प्रकाश डाला I आपने कहा कि आगे चुनौतियां तो है किंतु संस्थान उन चुनौतियों का सामना करने में हम पूर्णतया सक्षम है और संस्थान इस दिशा में काम भी कर रहा है I

हम किसानों के लिए कम लागत वाली प्रौद्योगिकियों को विकसित करने की दिशा में काम कर रहे हैं और हम  किसानों के लिए ज्यादा से ज्यादा उन्नतशील  बीज उपलब्ध करने की दिशा में सतत प्रयास कर रहे हैं, मिनी दाल और प्रोद्योगिकियों को और अपग्रेड किया गया है I

निदेशक महोदय ने जानकारी दी कि अभी हाल ही में आयोजित विकसित कृषि संकल्प अभियान 2025 के सफलतापुर आयोजन में संस्थान ने सक्रिय भूमिका निभाई, वैज्ञानिकों की 17 टीमों ने न केवल आधुनिक कृषि तकनीकों से किसानों को अवगत कराया, बल्कि उनकी परंपरागत कृषि संबंधी समस्याओं को भी गंभीरता से समझते हुए व्यवहारिक समाधान प्रस्तुत किए। मृदा स्वास्थ्य, जल प्रबंधन, कीट नियंत्रण, उन्नत बीज, जैविक विधियाँ और बाजार से जुड़ाव जैसे मुद्दों पर विशेष ध्यान दिया गया। साथ ही साथ उन्होने संस्थान में चल रहे

सरकार दालों के उत्पादन को लेकर काफी गंभीर है और इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु समय-समय पर अतिरिक्त धनराशि भी आवंटित की जा रही है I आपने  बताया कि हमें सरकार से पूरा सहयोग मिल रहा है और हम, आने वाले समय में दलहन उत्पादन में नए कीर्तिमान स्थापित करने की ओर अग्रसर हैं I

मुख्य अतिथि श्री विनय पाठक जी ने संस्थान के निदेशक महोदय द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट की घोर सराहना करते हुए संस्थान की पिछले एक वर्ष में किये गए उपलब्धियाँ/कार्यों की मुक्त कंठ से सराहना की, आपने बताया कि दलहन संस्थान अपने अनुसंधान कार्यों के माध्यम से देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है I उन्होंने समय के साथ संस्थान को आगे बढने के लिए किये जा रहे प्रयास की सराहना करते हुए, सहयोगात्मक शोध करने की आवश्यकता पर जोर् दिया I कुलपति महोदय नें डेटा मैनेजमेंट स्ट्रेटेजीज और एनालिसिस पर भी जोर देता हुये आने वाले समय में इसकी महत्ता पर भी धयान केन्द्रित किया, आपने बताया कि आवश्यकता इस बात की है कि हमारे किसानों को खेती के साथ-साथ उसके विपणन/ व्यवसाय की भी पर्याप्त जानकारी हो, जिससे कि वह ज्यादा से ज्यादा लाभ उठा सके I उन्होंने पूर्व प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री द्वारा चलाये गये “जय जवान जय किसान” नारा की महत्ता और उसकी उपलब्धियों का जिक्र किया जिसको द्वारा हम आज खाद्यान उत्पादन में आत्म निर्भर हो पाए है I

डॉ सुनील चंद्र दुबे, कुलपति, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, रांची झारखंड जी नी दालो की महत्ता और उसमें किये जा रहे शोध का वृस्तित रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए दालो में आने वाले समय में शोध में बदलाव और अपडेट की महत्ता पर एक रिसर्च रिपोर्ट पस्तुत की I

विशिष्ट अतिथि डॉ सीमा परोहा ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए दालों में पाए जाने वाली पोषक तत्वों की महत्ता की बारे में बताते हुए गत वर्षों में आईपीआर द्वारा विकसित की गई दलहनी फसलों प्रजातियाँ अत्यंत सराहनीय है, आप ने संस्थान की  उपलब्धियों की प्रशंसा की  एवँ संस्थान के  वर्तमान निदेशक डॉ जी.पी.दीक्षित द्वारा किये गए कार्यों / उपलब्धियों की  सराहना करते हुए कहा कि  आपके कुशल नेतृत्व में संस्थान में शोध कार्य सुचारू रूप से चल रहा है और आगे दलहन और शर्करा संस्थान द्वारा सहयोगात्मक शोध करने की पेशकश की I

प्राइवेट-पब्लिक पार्टनरशिप के महत्व को ध्यान में रखते हुए संस्थान द्वारा समय-समय पर एमओयूज साइन किए जाते हैं,इसी क्रम में आज सीएसजेएम इनोवेशन फाउंडेशन, कानपुर और पल्सेस इन्नोवेशन हब एबीआइसी,आईपीआर,कानपुर के मध्य समझौता ज्ञापन भी हस्ताक्षरित हुआ है I      इस अवसर पर संस्थान द्वारा प्रकाशित कुछ नवीन प्रकाशनों – टेक्निकल बुक सॉइल बोर्न पैथोबायोम्स ऑफ़ ग्रेन लेग्यूम्स,टे क्निकल बुक आउट रीच प्रोग्राम्स ऑफ आईसीएआर-आईआईपीआर, टेक्निकल बुलेटिन इंसेक्ट पेस्ट डिजीजेज ऑफ़ काउपी, टेक्निकल बुलेटिन थ्राइविंग विद पल्सेस का मुख्य अतिथि द्वारा विमोचन किया गया I

साथ ही  प्रदेश के विभिन्न जनपदों से आये प्रगतिशील किसान भाइयों को भी दलहनी खेती में उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए  मुख्य अतिथि द्वारा सम्मानित भी किया गया एवँ उन्नतशील बीज उपलब्ध कराए गए I साथ ही इस अवसर पर वर्ष 2025 में, उत्कृष्ट कार्य करने हेतु  डॉ एम. एच. कोडंडाराम को उत्कृष्ठ वैज्ञानिक पुरष्कार  (वरिष्ठ श्रेणी), डॉ सुजयानंद जी. के. को उत्कृष्ठ वैज्ञानिक पुरष्कार (युवा श्रेणी), तकनीकी वर्ग में श्री आरकेएस यादव को, वित्त एवं लेखा अधिकारी वर्ग में श्री कुणाल कालरा को, एवं प्रशासनिक वर्ग में श्रीमती मीनाक्षी वार्ष्णेय सर्वोत्तम कार्यकर्ता अवार्ड से पुरष्कृत किया गया I डॉ नरेंद्र कुमार एवं टीम को शोध एवम विकास गतिविधियों के लिए उत्कृष्ठ टीम अवार्ड से सम्मानित किया गया I धन्यवाद ज्ञापन डॉ शैलेश त्रिपाठी , परियोजना समन्वयक  (रबी) द्वारा प्रस्तुत किया गया, कार्यक्रम का संचालन डॉ रेखा रानी वैज्ञानिक एवं डॉ राजकुमार मिश्र, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा किया गया  I





